एम.ए. (हिन्दी) I सेमेस्टर

डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

प्रथम पत्र

प्रश्न : कृष्ण-भक्ति काव्य परंपरा में सूरदास का स्थान निरूपित करें।

उत्तर

कृष्ण भक्ति काव्य परंपरा बहुत पुरानी है। सर्वप्रथम कृष्ण की लीलाओं का वर्णन संस्कृत काव्य 'बुद्धचरित' में देखने को मिलता है जो संस्कृत के कवि अश्वघोष द्वारा लिखित है। हाल कृत 'गाहा-सतसई' में कृष्ण-राधा, यशोदा और गोपियों से सम्बद्ध अनेक कथाएँ देखने को मिलती हैं। पाँचवीं सदी में दक्षिण भारत में आलवार भक्तों के सहयोग से वैष्णव भक्ति की उद्भावना देखने को मिलती है। भट्टनारायण ने अपने नाटक 'वेणी संहार' में राधाकृष्ण की प्रेम लीलाओं का वर्णन किया है। नवीं शताब्दी में 'ध्वन्यालोक' में कृष्ण-लीलाओं का वर्णन आया है। दसवीं शताब्दी में 'कवीन्द्र वचन समुच्चय' में कृष्ण-लीलाओं का वर्णन मिलता है। बारहवीं शताब्दी में हेमचन्द्र द्वारा लिखित 'प्राकृत पैंगलम' में राधा-कृष्ण संबंधी रचित दोहे कृष्ण की लीलाओं से ही सम्बन्धित हैं। इस हिन्दी काव्य में श्री कृष्ण की लीलाओं और भक्ति से संबंधित काव्य की एक सुदीर्घ परंपरा विकसित रूप में दिखलाई पड़ता है।

डॉ० ब्रजेश्वर वर्मा के अनुसार—

"आधुनिक भाषाओं में कृष्ण-भक्ति साहित्य की रचना होने से पहले प्राकृत और संस्कृत साहित्य में एक लंबी परंपरा रही है। इस साहित्य का लोकगीतों तथा लोककथाओं से घनिष्ठ संबंध था और अधिकतर गीत मुक्तक के रूप में प्रचलित थे। जो रचनाएँ प्रबंध काव्य और नाटक के रूप में थे उनमें भी कदाचित गीति-भावना रही होगी। संभवतः इसी कारण संस्कृत साहित्य में उन्हें संभवतः इसी कारण अधिक गौरव नहीं मिल सका। परंतु आगे चलकर परिस्थितियाँ बदलीं, जिसके फलस्वरूप काव्य की प्रेरणा, भावना, रूप और भाषा में आमूल परिवर्तन हो गया है। इस परिवर्तन के क्रम में हिन्दी में कृष्ण-काव्य को जन्म मिल

हिन्दी काव्य में कृष्ण-भक्ति साहित्य की प्रासंगिक भूमिका के रूप में 'गीत-गोविन्द' को स्वीकार किया गया है। इसमें कृष्ण को नायक राधा को नायिका और गोपियों को लीला सहचरी के रूप में बताया गया है। जयदेव ने इसे राधा-कृष्ण के उद्दाम यौवन के अंकन पर आध्यात्मिक कृति कहा है। विद्यापति पदावली कृष्ण-भक्ति काव्य के अंतर्गत होने पर भी मादकता से ओत-प्रोत ग्रंथ है। कृष्ण-भक्ति काव्य के अंतर्गत सूरदासजी द्वारा रचित 'भ्रमरगीत' हिन्दी-काव्य का एक उत्कृष्ट ग्रंथ है। उनके 'सूर-सागर' ग्रंथ को इतनी लोकप्रियता मिली कि कृष्ण-भक्ति काव्य की अजस्र स्रोत-वाहिनी की धारा प्रवाहित हो गई। पुष्टिमार्ग में दीक्षित कवियों द्वारा हिन्दी में कृष्ण-भक्ति से संबंधित अनेक ग्रंथों की रचना हुई। इनके अतिरिक्त राधावल्लभी संप्रदाय, हरिदासी संप्रदाय, निम्बार्क संप्रदाय, गौड़ीय संप्रदायों के भक्तों द्वारा कृष्ण-भक्ति काव्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। कृष्ण भक्ति काव्य की अनन्य भक्त कवयित्री मीराबाई के नाम को भला कौन भूल सकता है। उन्होंने अपने पदों में कृष्ण के भक्ति के संबंध में विरह के जो पद रची हैं वे हिन्दी साहित्य में बेजोड़ हैं। इन्हीं की परंपरा में सहृदय कवि रहीम और रसखान आते हैं जिन्होंने अपने फक्कड़ पदों से कृष्ण-भक्ति की ऐसी गंगा बहाई कि इनके रस में डुबकी लगाकर लोग आज भी आह्लादित होते हैं। इनके अलावे नरोत्तमदास, गंग-कवि, राजा टोडरमल एवं बीरबल का नाम लिया जा सकता है। रीतिकालीन कवियों में नागरीदास, अलबेली, हित वृंदावन दास, भगवत रसिक एवं आनंदघन का नाम प्रमुख है। आधुनिक काल के कवियों में कृष्ण-भक्ति काव्य की परंपरा मजबूत रूप में हमें दिखलाई पड़ती है। आधुनिक युग के कवियों में सत्यनारायण कविरत्न, कवि जगन्नाथदास 'रत्नाकर',

Scanned with CamScanner

वियोगी हरि, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध तथा मैथिलीशरण गुप्त के नाम को भला कौन भूला सकता है। इन कवियों ने कृष्ण-भक्ति संबंधित पदों कृष्ण-भक्ति का बखूबी परिचय किया है। रत्नाकर जी का 'उद्धव शतक' और हरिऔध जी का 'प्रियप्रवास' कृष्ण-भक्ति से संबंधित हिन्दी के उत्कृष्ट काव्य हैं जिसने उस परंपरा को जीवित रखा है।

कृष्ण-भक्ति काव्य परंपरा में जो स्थान सूरदास जी को प्राप्त है वह स्थान इतना ऊँचा है कि वहाँ तक किसी और कवि का पहुँच पाना काफी मुश्किल है। सूरदास जी ने कृष्ण की विभिन्न लीलाओं के माध्यम से कृष्ण के जीवन को इतना विशद और व्यापक बना दिया है कि वहाँ तक पहुँच पाना किसी और कवि के लिए संभव ही नहीं असंभव है। 'सूरसागर' उनका प्रमाणिक ग्रंथ है। इनमें करीब सवा लाख के आस-पास कृष्ण के भक्ति से संबंधित पद हैं। इन पदों में जीवन के विविध प्रसंग इतने व्यापक और सूक्ष्म रूप में उपलब्ध हैं कि दुनिया के किसी कवि को उन तक पहुँच पाना मुश्किल है। इन पदों में सूर ने अद्भूत सफलता पाई है। उन्होंने श्रीकृष्ण के लोकरंजक रूप को अपने काव्य का आधार बनाया है। सूर को मुक्तक की रचना करना अभीष्ट न था। उन्होंने श्रीकृष्ण की कथा को प्रबंध उपयोगी बनाया, जिसमें कृष्ण के तीनों रूप — बाल्यावस्था, युवावस्था, के साथ-साथ लोकरंजक रूप को भी शामिल किया। 'सूरसागर' के पदों में उनके तीनों रूपों का मोहक वर्णन स्पष्टतः देखा जा सकता है। बाल-वर्णन एवं भ्रमर गीत में सूर का पूरा व्यक्तित्व समाया हुआ है। एक तरफ बाल-कृष्ण के रूप में सूर ने बाल-सुलभ करतब एवं चेष्टाओं का ऐसा सुन्दर वर्णन किया है कि बाल-सुलभ क्रीड़ाओं का कोना-कोना छान मारा है। दूसरी तरफ, कृष्ण की युवावस्था के चित्रण में राधा-कृष्ण के प्रेम की झाँकी के रूप में श्रृंगार पक्ष

का उन्होंने इतना सुंदर वर्णन किया है कि देखते ही बनता है। श्रृंगार पक्ष में उन्होंने श्रृंगार के दोनों पक्षों का बड़ा सुंदर निर्वाह किया है। यह उनके एक सुंदर दृष्टांत से समझा जा सकता है —

मानो बँधी इन्दुमण्डल में रूप सुधा की पारि।
चपल नैन नासा बिच सोभा, अधर सुरंग सुढ़ारी।।

अथवा

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पे जबतें स्याम सिधारे।।

इन दो उदाहरणों से पुष्टि होती है कि सूर श्रृंगार के दोनों पक्षों — संयोग और वियोग में सिद्धहस्त कवि थे। सूरदास के भ्रमर गीत में सिर्फ विरह कातरता एवं विरह व्यथा की छटपटाहट ही नहीं दिखलाई पड़ती है बल्कि उनमें यत्र-तत्र व्यंग्य और विनोद के पुट भी देखने को मिलते हैं। 'भ्रमरगीत' सूर साहित्य का श्रेष्ठ अंश है। इसमें नारी हृदय के उद्वेग और एवं अंतर्दशाओं का बड़ा ही मार्मिक चित्र उपस्थित किया गया है। वस्तुतः सूर ने विरह का बड़ा ही व्यापक चित्र उपस्थित किया है। गोपियों के विरह वर्णन में तो मानो अपने हृदय का सम्पूर्ण रस ही उड़ेल दिया है। यहाँ विरह के वियोग में न सिर्फ राधा या ब्रज की गोपियाँ ही व्याकुल हैं, बल्कि ग्वाल-बाल नंद-यशोदा, यहाँ तक कि वहाँ के पशु तक कृत गात हो गए हैं। यहाँ तक कि कालिन्दी भी विरह ज्वर से से तपकर काली हो गई है।

श्रीकृष्ण की लीलाओं से संबंधित सूरदास ने जितने भी पद रचे हैं उनमें जीवन की विविधता एवं सरलता दोनों सही अनुपात आए हैं। उनके जैसे श्याम लीला का वर्णन अन्यत्र देखने को नहीं मिलते। उन्होंने भक्ति के माध्यम से भक्ति का एक नया भाव दे रच दिया है जिसमें निर्गुण के ऊपर सगुण की विजय को दिखलाया है। इसलिए कृष्ण की भक्ति परंपरा में सूरदास का सबसे ऊँचा स्थान है। उनके निकट कोई भी दूसरा कवि फटक भी नहीं पाया।